डॉ॰ किरण माला

संस्कृत विभाग

मगध महिला कॉलेज

B॰A॰ part III Hons॰

समास

समास का तात्पर्य है **'संक्षिप्तीकरण'**। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे – राज्ञ:पुरुष:(राजा का पुरुष) हम इसे राजपुरुष: भी कह सकते हैं।

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहते हैं। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न -लुप्त हो जाते हैं। जैसे (परसर्ग)राजपुरुष :।

समास-विग्रह

सामासिक शब्दों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।विग्रह के पश्चात सामासिक शब्दों का लोप हो जाता है जैसे- राज+पुरुष -राजा का पुरुष ।

पूर्वपद और उत्तरपद

समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे-गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।

समास : पंचधा - समास पाँच हैं ।

1. केवल समास
2. अव्ययीभाव
3. तत्पुरुष :- (तत्पुरुष का भेद (A)कर्मधारय) - (कर्मधारय का भेद (B) द्विगु)
4. बहुव्रीहि

5. द्वन

- **अव्ययीभाव समास**

जिस समास का पहला पद(पूर्व पद) प्रधान हो और वह अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे – यथामति (मति के अनुसार), आमरण (मृत्यु तक) इनमें यथा और आ अव्यय हैं।

कुछ अन्य उदाहरण –
आजीवन – जीवन-भर
यथासामर्थ्य – सामर्थ्य के अनुसार
यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार
यथाविधि- विधि के अनुसार

परिभाषा :- अव्ययम् विभक्ति -समीप -समृद्धि - व्यृद्धयर्थाभावात्यया- संप्रति -शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूव् र्य-यौगपद्य-सादृश्य -संपत्ति - साकल्यांतवचनेषु ।

- विभक्ति
- समीप
- समृद्धि
- समृद्धिका नाश
- अभाव
- नाश
- अनुचित
- शब्द की अभिव्यक्ति
- पश्चात
- यथा
- क्रमश :
- यौगपद्य(एक साथ)

- सादृश्य(समानता)
- संपत्ति
- साकल्य(संपूर्णता)
- अन्त

  इन 16 अर्थों मे वर्तमान अव्यय का सुबंत के साथ समास होता है और उस समास को अव्ययीभाव समास कहते हैं ।

  उदाहरण - अधिहरि ,उपकृष्णम् , सुमद्रम ,दुर्यवनं , निर्मक्षिकम, इतिहरि इत्यादि ।

- **सूत्र - प्रथमा निर्दिष्टम समास उपासर्जनम्** :
  समसविधान करनवाले सूत्र मे प्रथमा विभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसे उपसर्जन कहते हैं । उदा॰ अव्ययम् विभक्ति -समीप -समृद्धि......सूत्र मे अव्ययम् पद प्रथमा विभक्ति मे है अत : ये उपरोक्त सूत्र के अनुसार उपसर्जन संज्ञक होगा।

- **उपासर्जनम् पूर्वम् :**

समास मे उपसर्जन का प्रयोग पहले होता है । उदा ॰ - हरि ङि॰ अधि इसमे अधि का प्रयोग पहले होगा क्योंकि अधि उपसर्जन है। सूत्र अनुसार इसका पहले प्रयोग होने पर रूप बनेगा - अधि हरि ङि॰ । प्रतिपदिक होने के कारण सुप (विभक्ति)लोप होकर अधिहरि रूप बनने पर अव्ययीभाव समास होने के कारण प्राप्त सुप का लोप होकर **अधिहरि** रूप सिद्ध होता है ।

- **अव्ययीभावश्च :** अव्ययीभाव समास नपुंसकलिंग होता है । उदा॰ गोपा ङि॰ अधि मे **अव्ययम् विभक्ति -समीप -समृद्धि॰ ..** से पूर्ववत समास होकर अधिगोपा रूप बंता है । इस स्थिति मे अव्ययीभाव होने के कारण प्रकृत सूत्र से नपुंसकलिंग होगा । आत **:" ह्रस्वो नपुंसके"** सूत्र से गोपा का ह्रस्व होकर **अधिगोप** रूप बनेगा । पुन: प्रथमा विभक्ति मे अधिगोप सु होगा । अंत मे नपुंसक लिंग होकर **अधिगोपम्** रूप सिद्ध होगा ।
- **नाऽव्ययीभावदतोऽम् त्वपञ्च्म्या: - अकारांत** अव्ययीभाव के पश्चात सुप का लोप नहीं होता ।किन्तु पंचमी को छोड़कर अन्य विभक्तियों के बाद सुप के स्थान पर अमादेश

हो जाता है । उदा॰ अधिगोप सु प्रकृत सूत्र से सु के स्थान पर अम् होकर **अधिगोपम्** रूप बना ।

तृतीया -सप्तम्योर्बहुलम् : अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात तृतीया (टा)

और सप्तमी (डि॰)की विभक्ति के स्थान पर बहुलता अम् आदेश होता है । उदा॰ -कृष्ण के समीप अर्थ मे **कृष्ण ड.स् उप** इस विग्रह मे समीप अर्थ मे वर्तमान अव्यय उप से **अव्ययम् विभक्ति -समीप -समृद्धि॰ ..**सूत्र से उपकृष्ण रूप बनेगा । यहाँ तृतीया विभक्ति के अर्थ अर्थ मे उप **कृष्ण टा** रूप बनने पर टा के स्थान पर प्रकृत सूत्र से टा के स्थान पर अम् होकर **उपकृष्णम्** रूप सिद्ध होता है ।

अव्ययम् विभक्ति -समीप -समृद्धि॰ ..सूत्र से बने अन्य अव्यय से बने रूप का उदाहरण -

समृद्धि अर्थ मे -मद्राणाम् समृद्धि: = सुमद्रम् यहाँ सु अव्यय का सुबंत मद्राणाम् के साथ समस हुआ है ।

व्यृद्धि अर्थ मे -यवनानाम् व्यृद्धि: यहाँ व्यृद्धि अर्थ मे वर्तमान दुर् अवयय का सुबन्त यवनानाम् के साथ समस हुआ है ।

अभाव अर्थ मे - उदा ॰ निर्मक्षिकम् इस उदा॰ मे अभाव अर्थ मे वर्तमान निर् अवयव का सुबन्त मक्षिकाणाम् के साथ समस हुआ ।

अत्यय अर्थ मे - हिमस्यात्यय: इस उदा॰ मे नाश अर्थ मे वर्तमान अति अव्यय का सुबन्त हिमस्य के साथ समस हुआ है ।

असंप्रति अर्थ मे - अतिनिद्राम् इस उदा॰ मे असंप्रति अर्थ मे वर्तमान अति अवयय का सुबन्त निद्रा के साथ समस हुआ है ।

शब्दप्रादुर्भाव अर्थ मे - इतिहरि इस उदा॰ मे हरी शब्दस्य प्रकाश : इस विग्रह मे शब्दप्रादुर्भाव इस अर्थ मे वर्तमान इति अव्यय का सुबंत हरे : के साथ समस हुआ है ।

पश्चात अर्थ मे - अनुविष्णु इस उदा॰ मे विषणो: पश्चात इस विग्रह मे पश्चात अर्थ मे वर्तमान अनु अव्यय का सुबंत विषणो:के साथ समस हुआ है ।

यथा अर्थ मे- यथा के चार अर्थ हैं । योग्यता ,वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति ,सादृश्य ।

1. **योग्यता अर्थ मे -** अनुरूपम् रूपस्य योग्यम् इस विग्रह मे योग्यता अर्थ मे वर्तमान अनु अव्यय का सुबंत रूपस्य के साथ समस हुआ है।
2. **वीप्सा अर्थ मे** प्रत्यर्थम्, अर्थम्अर्थम् प्रति इस विग्रह मे वीप्सा (दोहराना)अर्थ मे वर्तमान प्रति अव्यय का सुबंत अर्थम् के साथ समस हुआ है।
3. **पदार्थानतिवृत्ति अर्थ मे -**शक्तिमनतिक्रम्य इस उदा।॰ मे पदार्थानतिवृत्ति अर्थ मे वर्तमान यथा अव्यय का सुबंत शक्तिम् के साथ समस हुआ है।
4. **सादृश्य अर्थ मे-** सहरि इस उदा॰ मे सादृश्य अर्थ वर्तमान अव्यय सह का सुबंत हरे : के साथ समस होकर सहहरि रूप बनता है और अंत मे अव्ययी भावे चकले सूत्र से सह के स्थान पर स होकर सहरि रूप बनता है।